हिंदी वर्तनी में सामान्य अशुद्धियाँ एवं उनके शुद्ध रूप

नीचे दी गई तालिका में हिंदी शब्दों की **मानक वर्तनी (शुद्ध रूप)**, उनके **प्रचलित अशुद्ध वर्तनी रूप**, तथा प्रत्येक त्रुटि का **संक्षिप्त कारण** प्रस्तुत किया गया है।
यह सूची **केंद्रीय हिंदी निदेशालय** द्वारा प्रकाशित *"देवनागरी लिपि एवं हिंदी वर्तनी का मानकीकरण (2024)"* तथा प्रामाणिक शुद्ध/अशुद्ध शब्द सूचियों पर आधारित है।

इस तालिका में निम्न प्रकार की वर्तनी-सम्बंधी त्रुटियों को समाहित किया गया है:

- स्वर एवं मात्रा संबंधी त्रुटियाँ (ह्रस्व / दीर्घ का भ्रम)
- अनुनासिक चिह्नों का प्रयोग (अनुस्वार / चंद्रबिंदु)
- नुक़्तायुक्त अक्षरों (ड़, ढ़, फ़ आदि) का अशुद्ध प्रयोग
- संयुक्ताक्षरों का टूटना या ग़लत संयोजन
- संधि-समास से जुड़ी अशुद्धियाँ
- उच्चारण-आधारित सामान्य वर्तनी भ्रांतियाँ

प्रत्येक उदाहरण में **शुद्ध वर्तनी** और **आम अशुद्ध वर्तनी** दोनों प्रमाणित स्रोतों के अनुसार दी गई हैं, तथा त्रुटि का कारण संक्षेप में समझाया गया है, जिससे शिक्षक, प्रशिक्षु अथवा संपादकीय परीक्षक त्रुटि के मूल कारण को स्पष्ट रूप से समझ सकें।

सामान्य अशुद्धियाँ, शुद्ध वर्तनी एवं कारणों की तालिका

क्रमांक	मानक वर्तनी (शुद्ध रूप)	सामान्य अशुद्ध वर्तनी	त्रुटि का कारण
1	आकाश	अकाश	शब्द के आरंभ में दीर्घ 'आ' का लोप
2	आगामी	अगामी	दीर्घ 'आ' के स्थान पर ह्रस्व 'अ'
3	आज़माइश	अजमाइश	'आ' का लोप तथा 'ज़' के स्थान पर 'ज'
4	अन्त्याक्षरी	अन्ताक्षरी	संयुक्ताक्षर 'त्य' में 'य' का लोप
5	आजकल	आजकाल	अनावश्यक दीर्घ स्वर जोड़ना
6	ढकना	ढाकना	अनावश्यक 'आ' की मात्रा
7	चारदीवारी	चरदीवारी	'चा' में दीर्घ स्वर का लोप
8	हस्तक्षेप	हस्ताक्षेप	'क्ष' से पहले अनावश्यक 'आ'

क्रमांक	मानक वर्तनी (शुद्ध रूप)	सामान्य अशुद्ध वर्तनी	त्रुटि का कारण
9	हथनी (एक यंत्र)	हाथनी	अनावश्यक दीर्घ ‘आ’
10	आशीर्वाद	अशिर्वाद	दीर्घ ‘ई’ के स्थान पर ह्रस्व ‘इ’
11	ईश्वर	इश्वर	प्रारंभिक दीर्घ ‘ई’ का लोप
12	दीपक	दिपक	दीर्घ ‘ई’ का ह्रस्वीकरण
13	लीजिए	लिजिये	दीर्घ-ह्रस्व स्वर में भ्रम
14	हानि	हानी	जहाँ ह्रस्व चाहिए वहाँ दीर्घ
15	अनूदित	अनुदित	दीर्घ ‘ऊ’ का प्रयोग न करना
16	ऋग्वेद	रगवेद	‘ऋ’ के स्थान पर ‘र’
17	तृतीय	त्रतीय	ऋकार की जगह ‘र’
18	ऋतु	रतु	‘ऋ’ स्वर की त्रुटि
19	पैतृक	पैत्रक	‘तृ’ के स्थान पर ‘त्र’
20	जैसा	जेसा	‘ऐ’ के स्थान पर ‘ए’
21	पैसा	पेसा	दीर्घ ‘ऐ’ का ह्रस्वीकरण
22	फेंकना	फैंकना	उच्चारण के आधार पर भ्रम
23	सेना	सैना	ह्रस्व-दीर्घ स्वर भ्रम
24	भाषाएँ	भाषाएं	चंद्रबिंदु का लोप
25	सैनिक	सेनिक	स्वर परिवर्तन
26	अलौकिक	अलोकिक	‘औ’ के स्थान पर ‘ओ’
27	औद्योगिक	ओद्योगिक	‘औ’ → ‘ओ’

क्रमांक	मानक वर्तनी (शुद्ध रूप)	सामान्य अशुद्ध वर्तनी	त्रुटि का कारण
28	लोहार	लौहार	‘ओ’ की जगह ‘औ’
29	औरत	ओरत	‘औ’ का लोप
30	प्रौढ़	प्रोढ़	‘औ’ की मात्रा त्रुटि
31	आँख	आंख	चंद्रबिंदु का अभाव
32	दाँत	दांत	अनुनासिक चिह्न की त्रुटि
33	बाँह	बांह	चंद्रबिंदु का लोप
34	मुँह	मुंह	चंद्रबिंदु के स्थान पर अनुस्वार
35	गूँगा	गूंगा	नासिक्य ध्वनि का लोप
36	टाँगना	टांगना	अनुनासिक चिह्न न लगाना
37	प्रातःकाल	प्रातकाल	विसर्ग (ः) का लोप
38	प्रायः	प्राय	शब्दांत विसर्ग का लोप
39	निःस्वार्थ	निस्वार्थ	‘निः’ में विसर्ग न लगाना
40	दुःख	दुख	विसर्ग का अभाव
41	निःशुल्क	निशुल्क	विसर्ग का लोप
42	आकांक्षा	आकांछा	‘क्ष’ के स्थान पर ‘छ’
43	नक्षत्र	नछत्र	संयुक्ताक्षर विघटन
44	संक्षेप	संछेप	‘क्ष’ की अशुद्धि
45	रक्षा	रच्छा	‘क्ष’ को तोड़कर लिखना
46	क्षीण	छीण	‘क्ष’ → ‘छ’
47	अयोध्या	अजोध्या	‘य’ की जगह ‘ज’

क्रमांक	मानक वर्तनी (शुद्ध रूप)	सामान्य अशुद्ध वर्तनी	त्रुटि का कारण
48	याचना	जाचना	ध्वनि-आधारित भ्रम
49	यमुना	जमुना	‘य’ → ‘ज’
50	योग	जोग	‘य’ → ‘ज’
51	कण्ठ	कंठ	संयुक्ताक्षर त्रुटि
52	इकट्ठा	इकट्टा	‘ठ्ठ’ का विघटन
53	कन्नड़	कन्नड	नुक़्ता का अभाव
54	पेड़	पेड	‘ड़’ के स्थान पर ‘ड’
55	सीढ़ियाँ	सीड़ियां	‘ढ़’ का अशुद्ध प्रयोग
56	श्रवण	श्रवन	‘ण’ → ‘न’
57	प्रणाम	प्रनाम	मूर्धन्य ‘ण’ की त्रुटि
58	नवाब	नबाब	‘व’ ↔ ‘ब’ भ्रम
59	धोबी	धोवी	‘ब’ ↔ ‘व’
60	कवयित्री	कवत्री	‘य’ ध्वनि का लोप
61	प्रत्येक	परत्येक	संयुक्ताक्षर तोड़ना
62	मनुष्य	मनुश्य	‘ष्य’ की अशुद्धि
63	अमावस्या	अमावश्या	‘स’ → ‘श’
64	संशोधित	संसोधित	संयुक्ताक्षर त्रुटि

नोट

उपरोक्त सभी उदाहरणों में **बाएँ स्तंभ में मानक वर्तनी (शुद्ध रूप)** तथा **मध्य स्तंभ में सामान्यतः पाई जाने वाली अशुद्ध वर्तनी** दी गई है।
त्रुटि-कारण स्तंभ में यह स्पष्ट किया गया है कि अशुद्धि किस प्रकार की है — जैसे:

- ह्रस्व-दीर्घ स्वर का भ्रम
- अनुनासिक चिह्न (चंद्रबिंदु / अनुस्वार) का लोप
- नुक़्तायुक्त अक्षरों का गलत प्रयोग
- संयुक्ताक्षरों का विघटन
- ध्वनि-समान अक्षरों (ज/य, ब/व, श/ष/स आदि) में भ्रम

इन मानक रूपों का आधार **केंद्रीय हिंदी निदेशालय** द्वारा निर्धारित नियम हैं, जिनका उद्देश्य हिंदी वर्तनी में एकरूपता बनाए रखना है।
सभी हिंदी प्रयोगकर्ताओं के लिए शुद्ध वर्तनी का अभ्यास आवश्यक है, जिससे लेखन में अर्थ का अनर्थ न हो और भाषा की शुद्धता बनी रहे।

स्रोत

उपरोक्त तालिका में उल्लिखित शुद्ध एवं अशुद्ध शब्द-रूप **भारतकोश** तथा **केंद्रीय हिंदी निदेशालय** द्वारा प्रकाशित मानक वर्तनी नियमों से लिए गए हैं।
विस्तृत नियमों के लिए देखें:
“देवनागरी लिपि एवं हिंदी वर्तनी का मानकीकरण – 2024”